अमर उजाला

प्रवाह

नई दिल्ली । बुधवार, 20 फरवरी 2019

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

यदि आप सौ व्यक्तियों की सहायता नहीं कर सकते, तो केवल एक की ही सहायता कर दें...
- मदर टेरेसा

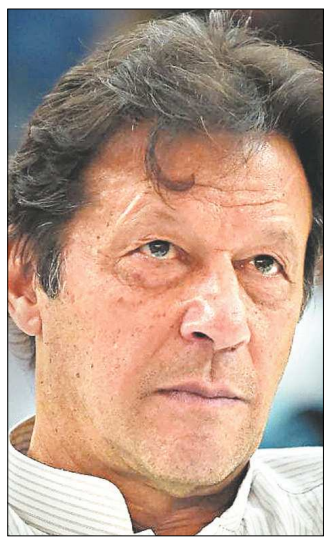

जैश ने खुद पुलवामा हमले की जिम्मेदारी ली है और इमरान सुबूत मांग रहे हैं! 26/11 से लेकर पठानकोट हमले तक ऐसे कितने उदाहरण हैं, जिनके बारे में सुबूत दिए जाने के बावजूद पाकिस्तान ने आतंकी सरगनाओं के खिलाफ कोई कार्रवाई नहीं की।

और कितने झूठ

पुलवामा में सीआरपीएफ के काफिले पर हुए भीषण आतंकी हमले के पांच दिन बाद पाकिस्तान के प्रधानमंत्री इमरान खान का जो बयान आया है, उसमें नया कुछ नहीं है। यह ऐसे हर आतंकी हमले के बाद पड़ोसी मुल्क से आने वाली प्रतिक्रिया की पुनरावृत्ति ही है। इस हमले को पाकिस्तान से अपनी आतंकी गतिविधियां चलाने वाले मसूद अजहर के संगठन जैश-ए-मोहम्मद ने अंजाम दिया था, जिसमें अर्द्धसैनिक बल के चालीस जवान शहीद हो गए। हमले के तुरंत बाद जैश ने इस हमले की जिम्मेदारी ली थी, उसके बाद तो वैसे भी कुछ कहने को रह नहीं जाता। और इमरान कह रहे हैं कि भारत पुलवामा में हुए हमले के सुबूत दे, तो वह कार्रवाई करेंगे! यह सिवाय दुनिया को भरमाने के और कुछ नहीं है। आखिर 26/11 के मुंबई में हुए आतंकी हमले के सिलसिले में भारत द्वारा मुख्य साजिशकर्ता हाफिज सईद के खिलाफ दिए गए दस्तावेजों का उनके मुल्क ने क्या किया? इसी तरह से पठानकोट में हुए आतंकी हमले के बाद, तो भारत ने बकायदा पाकिस्तान की खुफिया एजेंसी की टीम को एयरबेस में जाकर सुबूत इकट्ठा करने का अवसर भी दिया था और दिखाया था कि किस तरह से सीमा पार से आए आतंकियों ने उस हमले को अंजाम दिया था। सच्चाई यह है कि हाफिज सईद और मसूद अजहर जैसे आतंकी सरगनाओं को पाकिस्तान में पूरा संरक्षण प्राप्त है और उनका इस्तेमाल भारत के खिलाफ किया जाता है। आतंकवाद को लेकर पाकिस्तान की नीति में कोई बदलाव नहीं आया है। जनरल परवेज मुशर्रफ ने दिवंगत प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी के साथ 2004 में जारी किए गए संयुक्त बयान में कहा था कि वह अपनी जमीन से भारत के खिलाफ आतंकी गतिविधियों को अंजाम देने की इजाजत नहीं देंगे, लेकिन इसके चार साल बाद ही 26/11 के हमले को अंजाम दिया गया था। इसी तरह से सत्ता में आने के बाद इमरान खान ने भी कहा था कि वह अपनी जमीन से आतंकी गतिविधियों को संचालित नहीं होने देंगे, लेकिन पुलवामा के ताजा हमले के बाद उन पर कैसे भरोसा किया जाए! उनका रिकॉर्डेड संदेश ही इस बात का सुबूत है कि वह सेना, आईएसआई और आतंकी सरगनाओं के हाथों को कठपुतली हैं। यदि वाकई वह आतंकवाद को लेकर गंभीर हैं, तो उन्हें जैश-ए-मोहम्मद और मसूद अजहर के खिलाफ ठोस कार्रवाई कर सुबूत देना चाहिए।

जनहितैषी योजनाओं की राजनीति

केंद्र सरकार ने वर्ष 2018-19 के बजट में 50 करोड़ लोगों को स्वास्थ्य सुरक्षा प्रदान करने के उद्देश्य से एक बड़ी योजना की घोषणा की थी। कई राजनीतिक विश्लेषकों ने साहसिक कदम बताकर इसका स्वागत किया। लेकिन बहुत जल्दी जैसे ही इस योजना (आयुष्मान भारत) की रूपरेखा सामने आई, कई राज्यों ने इसे खारिज कर दिया। ओडिशा, तेलंगाना, दिल्ली, पंजाब और केरल ने योजना को अपूर्ण बताया। इन सभी राज्यों ने अपनी स्वयं की योजना को ज्यादा व्यापक पाया, भले ही इसका मतलब केंद्रीय निधि का नुकसान था, जो उनके राज्य में खर्च होती। इसने एक बार फिर सार्वजनिक धन खर्च करने में केंद्र की नीति से संबंधित पहले के विवादों को पुनर्जीवित कर दिया है।

हमारे संविधान के तहत केंद्र और राज्यों की विधायी शक्ति को संविधान के अनुच्छेद 246 में परिभाषित किया गया है। इसके तहत सातवीं अनुसूची में सूची एक, सूची दो और सूची तीन दी गई है। पहली सूची केंद्र की विधायी शक्तियों से संबंधित है, दूसरी सूची में ऐसे क्षेत्र हैं, जिन पर राज्य कानून बना सकते हैं। सूची तीन समवर्ती सूची है। केंद्र और राज्य, दोनों इसमें बताए गए विषयों पर कानून बना सकते हैं, लेकिन प्रधानता केंद्रीय कानून को है। इसके बावजूद, अधिकांश केंद्र प्रायोजित योजनाएं राज्यों की विधायी क्षमता में आने वाले विषयों से संबंधित हैं।

राज्य सूची में आने वाले विषयों पर योजनाएं शुरू करने का केंद्र सरकार का उत्साह कई कारकों पर निर्भर करता है। सबसे पहले, शिक्षा और स्वास्थ्य के कई संकेतकों में हमारा प्रदर्शन बहुत खराब है। सहस्राब्दी विकास लक्ष्य के तहत

केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तहत राज्यों को संसाधन वित्तीय हस्तांतरण के जरिये किया जाना चाहिए, जिसमें राज्यों को लचीलापन मिलना चाहिए। इन्हें राज्य के विकास को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए।

बी के चतुर्वेदी, पूर्व कैबिनेट सचिव

हमारी कुछ प्रतिबद्धताएं हैं। इसलिए इन क्षेत्रों में धन उपलब्ध कराया जाना महत्वपूर्ण है, ताकि प्रदर्शन को सुधारा जा सके। दुखद है कि अगर केंद्र इन क्षेत्रों में योजनाएं शुरू नहीं करता है और दिशा-निर्देशों के बिना राज्य सरकारों को धन हस्तांतरित करता है, तो राज्य इन राष्ट्रीय प्राथमिकताओं पर खर्च नहीं कर सकते हैं।

दूसरी बात, कुछ बुनियादी जरूरतें और बुनियादी ढांचे हैं, जो सभी नागरिकों, खासकर गरीबों के लिए आवश्यक हैं। इसमें सस्ती कीमत पर अनाज, ग्रामीण सड़क, ग्रामीण आवास, पेयजल, बिजली तक पहुंच, रोजगार के अवसर और बढ़ती क्षेत्रीय असमानताएं शामिल हैं। इन क्षेत्रों में समस्याएं होने पर केंद्र मूकदर्शक बना नहीं रह सकता। तीसरी बात, राज्यों और केंद्र में सत्ता पर कब्जा के लिए बढ़ते संघर्ष के साथ विभिन्न राजनीतिक दल ऐसी योजनाओं को लॉन्च करना पसंद करते हैं, जो उन्हें वोट दिला सके। चूंकि लोगों (मतदाताओं) के जीवन को प्रभावित करने वाले क्षेत्र आम तौर पर राज्य के हिस्से में हैं, केंद्र इन क्षेत्रों में प्रधानमंत्री योजना का नाम देकर योजनाएं शुरू करने की कोशिश करता है। यह स्पष्ट है कि इन योजनाओं के लिए केंद्र सरकार जिम्मेदार है और उसे इस योजना के तहत नागरिकों द्वारा प्राप्त लाभों का श्रेय दिया जाना चाहिए। राज्यों ने समान उद्देश्य के लिए केंद्रीय योजनाओं के अनुकरण में अपनी योजनाओं को मुख्यमंत्री योजना का नाम देने की कोशिश की। कई बार राज्य केंद्रीय निधियों का नुकसान उठाना पसंद करते हैं, क्योंकि उनका लाभ केंद्र में बैठी पार्टी को मिलता है। एनडीए सरकार के आने के बाद सुशासन के हिस्से के रूप में केंद्र प्रायोजित योजनाओं को तेजी से कम करने पर जोर दिया गया। लेकिन शीघ्र ही केंद्र सरकार द्वारा नई योजनाओं की घोषणा की गई। इनमें से कई स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, कृषि, शहरी विकास, सिंचाई और मध्यम और लघु उद्योग (सभी राज्य के विषय) से संबंधित हैं। नतीजा यह हुआ कि राज्य के अधिकार क्षेत्र के विषयों में केंद्र प्रायोजित योजनाएं फिर से बढ़ गईं।

राज्य विभिन्न आधार पर इसका विरोध करते हैं। पहला, तो यह कि हमारे जैसे विविध और बड़े देश में विभिन्न क्षेत्रों की विकास जरूरतें अलग-अलग हैं। राज्यों से एक समान दृष्टिकोण वाली इन योजनाओं को लागू करने के लिए कहना उनकी निजी विकास खाई की अनदेखी करना है। दूसरा, देश के विभिन्न क्षेत्रों में स्थानीय स्थितियां अलग-अलग हैं। ये योजनाएं इस पर विचार किए बिना एक समान प्रावधान और दिशानिर्देश बनाती हैं। अक्सर इन योजनाओं के तहत निर्धारित मानदंडों को राज्यों में सार्थक क्रियान्वयन के लिए बदलने की जरूरत होती है। पर केंद्रीय योजनाओं में इस लचीलेपन का अभाव होता है।

तीसरा, चूंकि इनमें से ज्यादातर योजनाएं राज्य के अधिकार क्षेत्र से संबंधित होती हैं, इसलिए राज्य अपनी योजनाओं को विकसित करने के लिए पूर्ण स्वतंत्रता चाहते हैं। वे चाहते हैं कि केंद्र अपनी जरूरतों के अनुसार धन के प्रभावी उपयोग के लिए सभी संसाधन उन्हें हस्तांतरित कर दे, जो हमारी नीति की संघीय प्रकृति के अनुरूप है। इससे यह होगा कि योजनाओं को राज्यों की जरूरतों के अनुरूप बनाया जाएगा और धन का उपयोग अधिक उत्पादकता के साथ किया जाएगा।

हमारी स्वतंत्रता के शुरुआती पांच दशकों में राज्यों की वित्तीय स्थिति बहुत अच्छी नहीं थी। पिछले दो दशकों में उनकी वित्तीय स्थिति में लगातार सुधार हुआ है, क्योंकि वित्त आयोग द्वारा की गई कई सिफारिशों को केंद्र सरकार ने समर्थन दिया। केंद्र द्वारा कुछ पूर्ववर्ती योजनाओं के वित्तपोषण में गिरावट के चलते राज्यों के संसाधनों पर अतिरिक्त दबाव के बावजूद उनके समग्र संसाधन में वृद्धि हुई। इसने उन्हें केंद्रीय वित्त पोषण और केंद्र में सत्तारूढ़ पार्टी को चुनावी लाभ देने वाली योजनाओं को खारिज करने के लिए वित्तीय मजबूती प्रदान की। कुछ राज्यों द्वारा आयुष्मान भारत के विरोध के पीछे कुछ हद तक उनकी यही धारणा हो सकती है। लेकिन ऐसा रवैया विकास के लिए ठीक नहीं है।

स्पष्ट है कि केंद्र प्रायोजित योजनाओं के तहत राज्यों को संसाधन वित्तीय हस्तांतरण के जरिये किया जाना चाहिए, जिसमें राज्यों को कुछ लचीलापन मिलना चाहिए। ऐसी योजनाओं का निर्माण राज्य के विकास को ध्यान में रखकर किया जाना चाहिए। ऐसा करने पर यह कई विकास समस्याओं का समाधान करेगा। लेकिन इसे राजनीतिक एजेंडा बनाना और प्रधानमंत्री या मुख्यमंत्री का नाम देना राष्ट्रीय विकास रणनीति की प्रभावशीलता को नष्ट कर देगा।

अंतर्ध्वनि

>> महादेवी वर्मा

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है

बचपन की स्मृतियों में एक विचित्र-सा आकर्षण होता है। कभी-कभी लगता है, जैसे सपने में सब देखा होगा। परिस्थितियां बहुत बदल जाती हैं। अपने परिवार में मैं कई पीढ़ियों के बाद उत्पन्न हुई। मैं उत्पन्न हुई, तो मेरी बड़ी खातिर हुई और मुझे वह सब नहीं सहना पड़ा, जो अन्य लड़कियों को सहना पड़ता है।

परिवार में बाबा फारसी और उर्दू जानते थे। पिता ने अंग्रेजी पढ़ी थी। हिंदी का कोई वातावरण नहीं था। मेरी माता जबलपुर से आईं, तब वह अपने साथ हिंदी लाईं। पहले-पहल उन्होंने ही मुझे पंचतंत्र पढ़ना सिखाया। बाबा कहते थे, इसको हम विदुषी बनाएंगे।

उसके उपरांत उन्होंने मिशन स्कूल में रख दिया मुझको। वहां का वातावरण दूसरा था, प्रार्थना दूसरी थी। मेरा मन नहीं लगा। वहां जाना बंद कर दिया। तब उन्होंने मुझे क्रास्थवेस्ट गर्ल्स कॉलेज में भेजा, जहां मैं पांचवें दर्जे में भर्ती हुई।

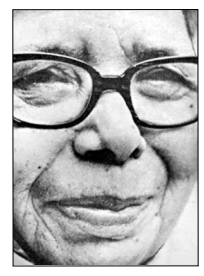

वहां छात्रावास के हर एक कमरे में हम चार छात्राएं रहती थीं। उनमें पहली ही साथिन सुभद्रा कुमारी मिलीं। वह मुझसे दो साल सीनियर थीं। वह कविता लिखती थीं और मैं भी बचपन से तुक मिलाती आई थी। बचपन में मां लिखती थीं, पद भी गाती थीं। मीरा के पद विशेष रूप से गाती थीं। सुन-सुनकर मैंने भी ब्रजभाषा में लिखना आरंभ किया। पर यहां आकर देखा कि सुभद्रा कुमारी जी खड़ी बोली में लिखती थीं। मैं भी वैसा ही लिखने लगी।

सुभद्रा जी मुझसे बड़ी थीं, प्रतिष्ठित हो चुकी थीं। उनसे छिपा-छिपाकर लिखती थी मैं। एक दिन उन्होंने कहा, तुम कविता लिखती हो। तो मैंने डर के मारे कहा, नहीं। अंत में उन्होंने मेरी डेस्क की किताबों की तलाशी ली, और बहुत-सा निकल पड़ा उसमें से। उन्होंने एक हाथ में कागज लिए और एक हाथ से मुझे पकड़ा और पूरे होस्टल में दिखा आईं कि यह कविता लिखती है। फिर हम दोनों की मित्रता हो गई।

-दिवंगत हिंदी कवयित्री

मंजिलें और भी हैं

>> स्नेहा

सैनिटरी पैड बनाते हुए अमेरिका तक का सफर

मैं उत्तर प्रदेश के हापुड़ जिले के एक गांव की रहने वाली हूं। मेरी उम्र तेईस साल है और मैं पुलिस में भर्ती होना चाहती हूं। लेकिन शादी के सामाजिक दबाव से बचने के लिए जरूरी था कि मैं पुलिस अधिकारी बनने से पहले कोई काम करूं। यही वजह है कि मैं एक एनजीओ से जुड़कर काम करने लगी। यह एनजीओ ग्रामीण महिलाओं की सबसे अहम जरूरत यानी सैनिटरी नैपकिन बनाने का काम करती है। जब मैंने यह काम शुरू किया था, तो मेरी सबसे बड़ी दिक्कत यह थी कि घर वालों को अपने काम के बारे में क्या बताऊं। शुरू में मैं अपने पिता को अपने काम के बारे में साफ-साफ नहीं बता पाई। मैंने उन्हें बताया कि मैं एक डाइपर फैक्टरी में काम करती हूं। लेकिन आगे चलकर मैंने अपनी झिझक तोड़कर सब कुछ साफ कर दिया।

घर वालों से सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलने के बाद मेरा आत्मविश्वास पहले से बढ़ गया। मैंने अपने दोस्तों और रिश्तेदारों से भी इस विषय पर बात करनी शुरू कर दी। मैं सबसे सैनिटरी पैड का इस्तेमाल करने की अपील करने लगी। मुझे इस काम के बदले बहुत ज्यादा कमाई तो नहीं होती, पर इन पैसों से मेरी कोचिंग की फीस निकल आती है। ऐसा नहीं है कि मेरे घर वाले मेरी पढ़ाई के लिए सक्षम नहीं है, लेकिन उन्हें यह देखकर अच्छा लगता है कि मैं खुद से कुछ कर पा रही हूं।

चंद हजार रुपये कमाने के अलावा मैंने लोगों को जागरुक करने की जो गाढ़ी कमाई हासिल की है, वह अनमोल है।

चूंकि हमारा काम समूह आधारित है, इसलिए कई अन्य जरूरतमंद लड़कियां भी मेरे साथ काम करती हैं। जिस एनजीओ के तहत हम काम करते हैं, उनकी मदद भी कुछ नेकदिल अमेरिकियों ने की है। लॉस एंजिलिस के एक स्कूल की दस बच्चियों और उनकी शिक्षिका ने हमारे एनजीओ को पैड बनाने वाली मशीन दान की है। दरअसल उनके कानों तक कहीं से यह खबर पहुंच गई थी कि हमारे इलाके में कई लड़कियां मासिक धर्म की वजह से स्कूल जाना छोड़ देती हैं।

यह बिल्कुल सच है कि न सिर्फ हमारे इलाके में, बल्कि भारत के कई इलाकों में यही सच्चाई है। इसके अलावा अधिकतर महिलाओं या लड़कियों के लिए दुकान से पैड खरीदना बहुत मुश्किल काम है। हमारी सामाजिक संरचना उन्हें असहज कर देती है। यही देखते हुए हमारे समूह की एक टीम लोगों के दरवाजे पर जाकर पैड सप्लाई करती है। इस तरह उत्पादन से लेकर विपणन तक का सारा काम हम खुद अंजाम देते हैं। फिलहाल हमारी यूनिट से हर दिन सात से आठ सौ पैड बेचे जाते हैं। भैंसों के बाड़े के पास में स्थित दो कमरों की फैक्टरी में हम लकड़ी की लुगदी से इको-फ्रेंडली सैनिटरी नैपकिन बनाते हैं, जिसके लिए हम पैडमैन नाम से मशहूर अरुणाचलम मुरुगनांथम द्वारा बनाई गई लो-कॉस्ट मशीन का इस्तेमाल करते हैं। करीब डेढ़ साल पहले हमारे काम पर आधारित एक फिल्म शूट हुई थी। तब मुझे नहीं पता था कि यह फिल्म ऑस्कर के लिए शॉर्टलिस्ट होगी। अब मुझे ऑस्कर समारोह के लिए अमेरिका जाना है, क्योंकि फिल्म में मुख्य किरदार मेरा ही है। अमेरिका जाने को मैं रोमांचित तो हूं, पर एक किस्म का भय भी है। दिल्ली के करीब होने के बावजूद अब तक मैं दिल्ली भी नहीं गई। लेकिन सच कहूं, तो हर महीने चंद हजार रुपये कमाने के सिवा मैंने कई लोगों को जागरूक करने की जो गाढ़ी कमाई हासिल की है, वह अनमोल है।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

'चार सौ बीस' किलो का धोखा-बम

कश्मीर की मौजूदा पीढ़ियों का यह दुर्भाग्य रहा कि उनके नेताओं ने उनका इस्तेमाल अपने लालच की तोप के बारूद की तरह किया है। उनके लिए किसी कश्मीरी युवा की हैसियत 350 किलो बारूद में 70 किलो के डेटोनेटर से ज्यादा कुछ नहीं रह गई।

कश्मीर के पुलवामा में एक आतंकवादी ने अपनी कार बम को सीआरपीएफ की बस से टकराकर चालीस जवानों की जान ले ली। सुरक्षा विशेषज्ञ इसे एक खतरनाक संकेत बता रहे हैं, क्योंकि भारत में यह अपनी तरह का पहला विस्फोट था, जिसमें 350 किलो बारूद का इस्तेमाल किया गया। लेकिन बम का वजन गिनाते हुए हम सब 70 किलोग्राम के उस बारूद को गिनना भूल गए, जो इस कार बम का असली डेटोनेटर था। इस बारूद का नाम था आदिल अहमद डार वल्द गुलाम अहमद डार और फहमीदा डार, उम्र बीस साल, निवासी कश्मीर घाटी का गांव लेथीपुरा। यानी पूरे बम का वजन था 420 किलोग्राम। अब सवाल है कि यह चार सौ बीसी किसके साथ हुई? कश्मीरी जनता के साथ, भारत के साथ, आदिल के साथ, गुलाम मियां और फहमीदा बेगम के साथ या फिर सबके साथ?

यह पहला मौका है, जब कश्मीर में सत्तर साल से चली आ रही हिंसा और अशांति में किसी इंसान को कार बम की तरह ठीक वैसे ही इस्तेमाल किया गया जैसा, अब तक सिर्फ पाकिस्तान, अफगानिस्तान और सीरिया जैसे इस्लामी मुल्कों में 'असली इस्लाम बनाम नकली इस्लाम' की लड़ाई में किया जाता रहा है। धीरे-धीरे छन कर सामने आ रही बातों से पता चल रहा है कि आदिल एक गरीब कश्मीरी परिवार से था, जो कुछ मुल्ला मौलवियों और आतंकवादियों के फंदे में फंसकर उनकी सियासत का बारूद बनने को तैयार हो गया।

मरने वालों की लिस्ट में आज तक किसी नेता अब्दुल्ला, मुफ्ती, गिलानी या मलिक के बेटे का नाम नहीं आया। डार परिवार को पता ही नहीं चल रहा कि

विजय क्रांति

उनका बेटा कब जैश-ए-मोहम्मद के हाथ पड़ा और कैसे उसे आतंकवादी बना दिया गया। लेकिन जैश-ए-मोहम्मद के आकाओं के लिए आदिल का फोटो पाकिस्तानी हुक्मरानों और जनता से पैसे बटोरने का जैकपॉट बन चुका है। आतंक और झूठ पर पलने वाले मरियल संगठन हुर्रियत को भी थोड़ा-सा और ग्लूकोज मिल गया। नेशनल कांफ्रेंस और पीडीपी के नेताओं ने पहले तो इस घटना को 'दुर्भाग्यपूर्ण' बताकर अपना शोक जताया। लेकिन धीरे-धीरे वे भी हुर्रियत की तर्ज पर आदिल की 'शहादत' में से राजनीतिक दूध दुहने की पुरानी होड़ में जुट गए हैं।

आदिल तो चला गया। पर उसकी मौत के विस्फोट ने कश्मीर के भीतर धीरे-धीरे खड़ी की गई धोखे की दीवार को गिराकर एक डरावने सच को नंगा कर दिया है। भारत के इकलौते मुस्लिम बहुल राज्य में वहां के ये कश्मीरी खिलाड़ी यह समझने को ही तैयार नहीं हैं कि उन्होंने शेष भारत के मुस्लिम समाज की छवि पर कितना बड़ा बट्टा लगाया है। पिछले सत्तर साल में जिस तरह से उन्होंने कश्मीर घाटी से किस्त-दर-किस्त वहां के गैर मुस्लिम नागरिकों को भगाया है, उसने शेष भारत के सामने बहुत खराब उदाहरण पेश किया है कि जहां-जहां मुस्लिम समाज बहुमत में आएगा, वहां गैर मुस्लिमों के साथ कैसा व्यवहार किया जाएगा।

कश्मीर का इतिहास दिखाता है कि इससे भी बुरा दुर्भाग्य कश्मीर घाटी से भगाए गए पंडितों, सिखों और दूसरे कई समाजों को भी झेलना पड़ा। लेकिन उन समाजों ने दूसरे समाजों के साथ मिलकर रहने और अपने लिए तरक्की का रास्ता चुनकर अपने लिए नई जगह भी बना ली है और अपना भविष्य भी संवारा है। लेकिन कश्मीर की मौजूदा पीढ़ियों का यह दुर्भाग्य रहा कि उनके नेताओं ने उनका इस्तेमाल अपने लालच की तोप के बारूद की तरह किया है। उनके लिए किसी भी कश्मीरी युवा की हैसियत कार में भरे 350 किलो बारूद में 70 किलो के डेटोनेटर से ज्यादा कुछ नहीं रह गई। क्या आपको लगता है कि कश्मीर के साथ इस चार सौ बीसी के लिए इतिहास कश्मीरी नेताओं को कभी माफ करेगा?

हरियाली और रास्ता

हवाई जहाज जैसी जीवन यात्रा

एक शिक्षक की कथा, जिसने छात्रों को हवाई जहाज के उदाहरण से जीवन की तैयारी के गुर बताए।

शिक्षक ने पूछा, हवाई जहाज और आम इंसान में क्या समानताएं होती हैं? सभी बच्चे शिक्षक की तरफ देखने लगे। शिक्षक बोले, आपने कभी सोचा है कि एक हवाई जहाज कुछ ही देर में कितने सारे लोगों को एक जगह से दूसरी जगह पहुंचा देता है। पक्षियों से भी ऊंची उड़ान भरता है, और कितनी बारीकी और सफाई से अपना गंतव्य हासिल कर लेता है! सभी बच्चे शिक्षक की बात गौर से सुन रहे थे। शिक्षक बोले, हम सब भी एक जहाज की तरह होते हैं। हमारे इस जहाज का ईंधन होता है हमारा ज्ञान। हम जितना ज्यादा ज्ञान प्राप्त करते हैं, हम उतनी ही लंबी उड़ान भर सकते हैं। हर उड़ान से पहले हमें ढेर सारा ज्ञान ग्रहण करना होता है। तभी हम लंबी उड़ान भर पाते हैं। हमारे इस जहाज का इंजन होता है हमारा विवेक, जो हमें सिखाता है कि हमें ज्ञान का किस तरह उपयोग करना है कि हम आगे बढ़ पाएं। और हमारे पंख होते हैं हमारा आत्मविश्वास, जो हमें हर उड़ान लेते वक्त, हवा में, और नीचे उतरते वक्त हमारा संतुलन बनाए रखता है। कई बार जब बादल रूपी विपरीत परिस्थितियां हमें घेर लेती हैं, तो यही विश्वास भरे पंख हमें उनसे बाहर निकालते हैं। कभी अगर ईंधन खत्म भी हो जाए, तो ये पंख हमें हवा के बहाव के साथ बहते हुए नीचे ले आते हैं। और नीचे जो रनवे होता है, वह होता है हमारा परिवार, हमारे मित्र, हमारे हितैषी। हमारा रनवे ही हमें सही मार्ग पर बढ़ने और अपनी उड़ान भरने में हमारी मदद करता है। और हमारी जिंदगी में एक और बहुत महत्वपूर्ण भूमिका होती है हमारे एयर कंट्रोल टावर की। यानी हमारे मार्गदर्शक, हमारे शिक्षकों की, जो हमें हर वक्त हमारी स्थिति का सटीक ब्योरा देते रहते हैं। तो बच्चों आप उड़ने के लिए तैयार हैं न? सभी बच्चे उड़ान भरने को एकदम तैयार थे।

जिंदगी रूपी यात्रा के लिए सही तैयारी बहुत जरूरी है।

खुली खिड़की

ऑनलाइन टीवी और फिल्म राजस्व

दुनिया भर में टेलीविजन और फिल्में देखने के तरीके में तेजी से बदलाव आया है।

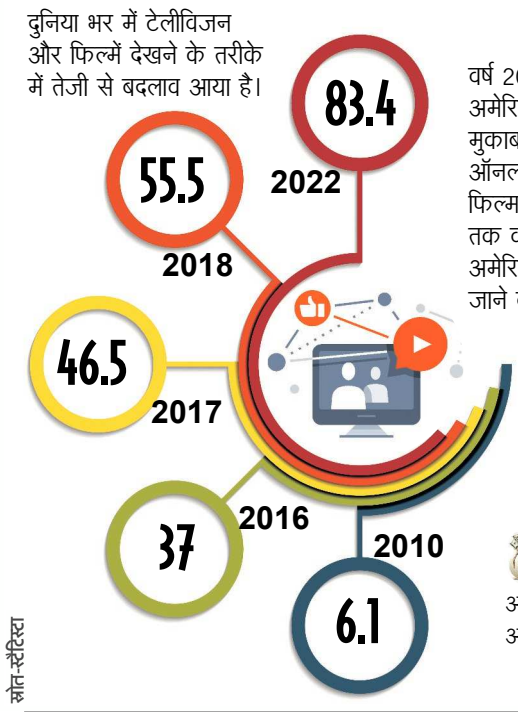

वर्ष 2010 के छह करोड़ अमेरिकी डॉलर के मुकाबले वैश्विक ऑनलाइन टीवी और फिल्म राजस्व 2022 तक करीब 83.4 करोड़ अमेरिकी डॉलर पहुंच जाने का अनुमान है।

आंकड़े- करोड़ अमेरिकी डॉलर में

स्रोत-स्टैटिस्टा

भामंडल का अहंकार

सत्संग

भामंडल नामक राजा थे तो धर्मात्मा, पर प्रमाद में ग्रस्त रहते थे। वह हर क्षण संत-महात्माओं के सत्संग के लिए आतुर रहते थे। संत कहते, आप पूजा-उपासना करते हैं, शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, यह अच्छी बात है। अपनी बढ़ी आयु को देखते हुए राजकुमार को राज्य सौंपें और शेष जीवन आत्मोद्धार में लगाएं। राजा उत्तर देते, महाराज, यदि मैंने राज्य त्याग दिया, तो मेरे वियोग में रानी जीवित नहीं रहेंगी और प्रजा का भी ठीक ढंग से पालन नहीं हो सकेगा। इसी आशंका से मैं यह दायित्व छोड़ने में हिचकिचा रहा हूं। एक बार उनके गुरु महल में पधारे। उन्हें जानकारी थी कि राजा भोग-विलास और आकांक्षाओं के प्रपंच में पड़कर अपना शेष जीवन वैराग्य में बिताने को तैयार नहीं। गुरु ने कहा कि अपनी आयु को देखते हुए राज्य का दायित्व राजकुमार को सौंपो और भोग से विरत हो जाने का दृढ़ संकल्प लो। यदि ऐसा नहीं करोगे, तो पाप के भागी बनोगे। राजा ने अहंकार में उत्तर दिया, गुरुदेव, मैंने यज्ञ और ध्यान के बल पर इतने पुण्य अर्जित कर लिए हैं कि भयंकर से भयंकर पापों को भी क्षण भर में भस्म कर डालूंगा। गुरु यह सुनकर हतप्रभ हो उठे। कुछ ही क्षण बाद आकाशीय बिजली गड़गड़ाहट के साथ महल पर गिरी और राजा काल के गाल में समा गए। *पद्मपुराण* में कहा गया है कि सत्ता के मद में चूर होकर यम को चुनौती देने वाले को कोई भी शक्ति नहीं बचा सकती।

-संकलित